* <u>आधुनिक प्रेस का उद्भव:</u>

एक शक्तिशाली सामाजिक संस्था के रूप में, प्रेस कम समय में बड़े पैमाने पर विचारों के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है। भारत में प्रिंटिंग प्रेस की शुरूआत एक क्रांतिकारी महत्व की घटना थी। राजा राम मोहन राय भारत में राष्ट्रवादी प्रेस के संस्थापक थे। 1821 में प्रकाशित बंगाली में उनकी 'संबद कौमुदी' और 1822 में फ़ारसी में प्रकाशित 'मिरात-उल-अकबर', एक विशिष्ट राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक प्रगतिशील विन्यास वाले पहले प्रकाशन थे।

कई राष्ट्रवादी और स्थानीय भाषा समाचार पत्रों के उद्भव ने भी जनमत जुटाने और राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनमें अमृत बाजार पत्रिका, द बंगाली, द बॉम्बे क्रॉनिकल, द ट्रिब्यून, द इंडियन मिरर, द हिंदू, द पायनियर, द मद्रास मेल, द मराठा, द केशरी आदि ने ब्रिटिश सरकार की विफलता को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लोगों को कल्याणकारी उपाय प्रदान करने में। समाचार एजेंसियों में, द फ्री प्रेस न्यूज़ सर्विस ने राष्ट्रवादी दृष्टिकोण से समाचार वितरित करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राष्ट्रीय आंदोलन प्रेस द्वारा उपलब्ध करायी गयी राजनीतिक शिक्षा एवं प्रचार-प्रसार की सुविधा के कारण संभव हुआ। इसकी सहायता से भारतीय राष्ट्रवादी समूह लोगों के बीच प्रतिनिधि सरकार के विचारों को लोकप्रिय बनाने में सफल रहे। प्रेस ने अंतरराष्ट्रीय जगत की खबरें भी दीं जिससे लोगों को भारत में अपनी स्थिति के बारे में पता चला।

भारत में राष्ट्रवादी प्रेस की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बहुत उत्सुक थे। राजा राम मोहन राय पहले सेनानी थे जिन्होंने इस उद्देश्य के लिए कुछ प्रबुद्ध राष्ट्रवादी भारतीयों जैसे द्वारकानाथ टैगोर, हरचंद्र घोष, चंद्र कुमार टैगोर, प्रसन्न कुमार टैगोर आदि के साथ कलकत्ता के सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर की थी। प्रेस की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का

एक अभिन्न अंग रहा है।

* आर्थिक शोषण:

भारत में ब्रिटिश शासन की सबसे बुरी विशेषता सभी वर्गों का आर्थिक शोषण था। अंग्रेज व्यापारी के रूप में भारत आये और उनका मुख्य उद्देश्य वित्तीय लाभ प्राप्त करना था। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के कारण विभिन्न विदेशी देशों से कच्चे माल के आयात और बाहर अपने माल के लिए व्यापक बाजार की खोज करना आवश्यक हो गया। भारत ने उन्हें दोनों प्रदान किये

ब्रिटिश सरकार ने भारत की कीमत पर अपनी सिविल सेवा और सैन्य बल बनाए रखा। ब्रिटिश औद्योगिक वस्तुओं की सार्वजनिक मांग का विस्तार करने के लिए स्वदेशी भारतीय उद्योगों को नष्ट करने का प्रयास किया गया। जबकि ब्रिटिश बाजार में उनके प्रवेश को प्रतिबंधित करने के लिए भारतीय वस्तुओं पर भारी आयात शुल्क लगाया गया था, भारत में कच्चे माल या ब्रिटिश वस्तुओं के लेनदेन के लिए मुक्त व्यापार नीति थी। दादाभाई नरोजी, महादेव गोबिंदा रानाडे, जी.के. जैसे नेता। गोखले आदि ने भारत में औपनिवेशिक शासन के आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण किया। इतनी अधिक मात्रा में आर्थिक शोषण का भारतीय राष्ट्रवाद के विकास पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और लोगों ने विदेशी सरकार के खिलाफ आंदोलन शुरू कर दिया।

* गौरवशाली भारतीय विरासत का पुनरुद्धार:

जब भारतीयों में औपनिवेशिक शासन के तहत शोषित होने के कारण हीन भावना विकसित हो रही थी, तो मैक्स मुलर, विलियम जोन्स, चार्ल्स विल्किंस आदि जैसे कुछ पश्चिमी विद्वानों ने भारत की गौरवशाली विरासत को

पुनर्जीवित किया। उन्होंने कुछ संस्कृत ग्रंथों का अंग्रेजी में अनुवाद किया और इसे साबित करने का प्रयास किया। प्राचीन भारतीय संस्कृति, इसकी विरासत और दर्शन की सर्वोच्चता। कुछ भारतीय विद्वान जैसे आर.जी. भंडारकर, एच.पी. शास्त्री आदि ने भी भारत के अतीत के गौरव को पुनर्जीवित करने में सहायता की। इन सभी ने लोगों में आत्मविश्वास और देशभक्ति की भावना को फिर से पैदा करने में मदद की।

जारी .....